





२०० नमः श्रीरुगावतवासुदेवाय ॥ लक्ष्मीपतकमनना रुमनमविष्ठा यदुभक्तपुमधस
दनवासुदेवा मामद्ययाहि विबुधभक्तवावनमः ५४ स्वातु वनियति नम्यवमकृत् ॥ ॥
हयनमः श्वन अगाधवलाहा गह यावश्वनम्यविद्यमाल अगर्थिदुःखया समुद्रसेकृनिष्ठावथा
दक्षा कुलपालगर्थि लक्ष्मीयास्यामि कमलना रधया द्वा रुनीसंपूर्ण यदुयागनी श्वन श्री कृष्णया
द्वा रुनीमधुदेवदुस्तवध्वं वासुदेवधया द्वा कुलपालस्य अलक्ष्मीयायमाल गर्थिद्वा कुलपालदे
वयानंदवक्त्रा ॥ धलिमरु लावननः ॥ श्वन नृकादजिक ॥ ॥ यधिष्ठिर उवाच ॥ उपवासस्य न कस्य
न क ह कस्य मयुहा किं नृ लं किं विभनधु कुहि नम्य अनादन ॥ १ ॥ यधिष्ठिर न श्री कृष्णया क

[illegible]

हविन्दर्व, पाषण्डुलयवर्जितं। न क्लानमहाबाहु, मयवाप्तस्य उच्यते॥१८॥ तानि लिङ्गानि कूटु उच्यन्ते नान्य
 शुद्धमन्त्रवर्जितं सोऽपि, स्नानयाद्यव, दवयुक्तायाय दुःखोऽस्ति निःसर्गमयाप्त, कूर्नमन्त्रेऽन्यत्र चिह्नं
 किं ज्ञानत्रयाद्यावत् (थउयाप्तमन्त्राभि॥ ॥ यथाकस्मयावत्, नियमकृत्तुमस्य च। मध्यान्त्रवत्तथा
 पार्थ, स्नानं शुचिसमाचरन्॥१०॥ हयविष्टिन्, रुर्नथ गुलिकाथर्नयाय, शुभे भवत्सुखानाम
 याय, वाद्भि, आवधत्तसप्तो न्याय, शुचिश्चावधानं॥ ॥ कथं वास्य धर्मज्ञानं, नद्या (केवमनू र्म
 । कथं वावर्ज्यज्ञानं, गजालनवकात्रयम्॥११॥ शुचिस्नानयाद्यगुन्, अथम, पूरुस्त्रिस्नानयाद्यगु
 नमध्याम, स्नानयाद्यगुन्, स्नान उरुम, थ (थयादुर्निन, शुचिस्त्रिस्नानमयाप्त, वरकूटु, सुसि

भ. ३३

समास इयमास ॥ ॥ पीयूषं वायनं ऊनमक्षवावसि ना। स्नातकं न ४ यार्थं पुसायायसमं
वेन ॥ १२ ॥ हयपिष्टिनं गुधिसं नसां पुरविमं नसां ऊनऊनयायी अइयू थुमु ल्याद्रु निन गुधिसं
पुरविमं स्नानयादनपूषमसाकं वायनं कं लोनां अथयाद्रु निनमनं व ॥ ॥ अश्वक्रान्तिमन्त्रं
गृहीत्वामर्हिकां गुरुं। प्रहृष्टदहमात्मानं बुद्धरु लीवाधाहमि ॥ १३ ॥ दीर्घगं मम तिका इवसां गुनं गी३
भामुनिका इवसां मदं मसां गुविचुनवा इवसां कायावस्तानयाय अश्वक्रान्तिमन्त्रं थुमु लमनु थासयावः
वानक्रान्तिमन्त्रं थुसियादनबुद्धरु ल्यायायकं ४ ॥ ॥ स्नानं कृत्वा गुविदहं कामस्यत्कात्रि
नदिय। क्रान्तिमन्त्रं यत्रिया अ. मेकवि हं ददुमं ॥ १४ ॥ थुमं सिं गुविस्नानयादाव कामकाधं नारुमा

श्रीदानविशद

ह. मद. मासा. भासगाव. कवि हं वगयाय ॥ ॥ नात्रापत्यतिगां ध्वेनं नथापाखल्लिना ऊनात। मिथ्या
वादयवत्तैव दवत्राक्षणिनिन्दकं ॥ १५ ॥ अथाश्वेवदुनावा ना. नगन्यागमननगाना यत्र द व्यापुहोनाश्व
यत्रदात्रातिगममिन ॥ १६ ॥ वगयायवत्तैव उष्ट. रू. पाखल्लि. मिथ्यावाददुनाक देव. वाक्षणिनिन्दाया
कदा. आवा नमदुका. अगम्यकर्मियाकदा. भवयादुवा रूवका. यत्रमु गमनयाकदा. थुमिप
अ. गमसर्तनामुयदमभव. वगयायवत्तैव ॥ ॥ कनर्वव इयित्वरु. नेवदुनिवकात्रयगु। दिपंद
द्युत्ययत्तन. रुकियकं नवगसा ॥ १७ ॥ अनंति विष्णुपूजायाय धूपदिय. नेवदुदयकाव. रुकैस
रुकरुयकावपूजायाया ॥ ॥ नदिनवदुयस्यार्थं निडांयेवकुमेथुन। वमं आत्माविनादन दिनववः

गुनिनिम्नमं॥१७॥अनलिधुक्कू यात्रागिसजागवजयाय म्मीसंशागभात्रन यत्रमं॥१८॥वययाय
 नयाय थथेवाडादि उहाना॥ ॥त्रागेजागवर्जगु रुकियूकूजिगदिय।वियागनदिकी॥
 दत्वा पुनियमविवर्जयत॥१९॥अकूकू थथे जागवनायाका वरुकि याय अथभकेन वाक्कनय
 निस्तददिकी वियाव दवनेमस्का नयायभीतिकू सुथभेवर्जविभर्जनयाय॥ ॥यथभुप्रा सुथभे॥
 कृष्ण विविठवर्मसंमि नासर्वथे कादनीयार्थ विरुदेनेव कात्रयत॥२०॥हयविष्टिन थुगु सिका
 धनेवुनयाय मथेभुक्कू यकू या नुकादभि अर्थ कृष्णयकू यां उनिधका व (॥॥॥गुलिं थुगु का
 थनयाय॥ ॥नुवहिकू नयमु गृणुतस्यापिन त्त्वं लीं शाकभननहात्वा ददादवमु गद्विनी॥२१॥

इगुणंयुष्मं नकंभकंनसंभय॥४०॥नकस्यार्धमुव न्यार्थ नकहकस्य कात्रका नकहक कूनक
 कं उयवांभसु थेवच॥४१॥भननायुष्मकर्मिण्येहकात्रक्लिणायता नकादभ्यावर्गयार्थ युष्मसंरक्त
 विद्यते॥४२॥गस्मात्स्वयांनुव थुगु वनभर्वसमाचन॥ ॥हयविष्टिन थुलिधकायुना नकादनिउयवा
 सनवाठकं यनादव थुनियार्थि नक शाउनयाककं यनादव नकहकं नकं नकादनिउयवासन
 थस्वतीं वरुं स्य नयायडा अर्कस्य नसंयुष्मवर्मदाका थं यत्रमं ॥४३॥वययाय रुकि कायडाकं नकादनि
 वुनयाययुन्यत्रसंस्वामद थुगुस्यादुर्नि वन थुगुलवुनयाववर्क ॥४४॥पुनयु विष्टिनकं दावविद्याना
 ॥ ॥युविष्टिनउवाच॥तुप्रसादनविन्द माहात्मां यश्च र्गमया उयत्वं ॥४५॥गुमिक्कापि नकाद (॥४६॥उनाद

ना ४३॥ यविष्ठिन, आकृष्टु याक ४० नाययागा, हयवभ ४४ नकुलयाल भपुसादन, नुकाय ४५ यामहिमार्क
 नकुलभूमी, आवन कादभिया उत्यरिगुलद म ४० क्वा थाटा, काकावेवि आयमाल ॥ ४४॥ आरुगवानुवा
 य॥ यनाकृगयगसायो, मनाश्या नामवि ४५ ग। अत्यग्र ४५ मा हात्रोद, सर्वदव हयकृन ॥ ४३॥ आकृष्टुन आकृष्टु पः
 ना हयविष्ठिन, पनायू ४५ सत्यकृगयानं आदिम, महा उग्रनं कवन, हयवियाव था क, दवद कृम मूलधया ४५
 नामदेह्य ॥ ४०॥ तुकुसादिवहन, कि का मर्ययुवद ना आदि हयविवावुका, वायुनगिस्तु (धेवच ॥ ४५॥
 हयविष्ठिन, आकृष्टु हयन, ४० न्या गभवाय कावय धिस का क्रात्रा, आदि हय, भिववुका वायु अग्नि ४० ह्यादि ॥
 ॥ नाना पुनिष्ठिन भन, सर्वभव यविष्ठिन दव गानि कि ता सर्व, मूत्र (भ) गुण धातु व ॥ ४५॥ हयातु न दन,

आकृष्टु हयन थ (ध) नाना यका न न संपूर्ण नाकृ क्रात्रा दवगयां कयलयत्रा, अर्थि मूत्र धयानामदेह्य ॥ स्वः
 मनिनाकृ गा ४ सर्व विचनकि महीनला ४५ म (क्ष) हयलीगात्मा, गंगा कृम हयवनी ॥ ४५॥ हयविष्ठिन थ (ध)
 कृष्टु हयन, दवगला सग्नन विरिक्कात्रा, अललि य धिस वत्रा, यदुमा इल ४५ हयग हीन कयाव, महा दवस
 क भवन वना ॥ ॥ भकुल कथिग नकु, क भवस्य कुवायग। सग्न ला कयत्रि, गुष्टा गुमनी चम
 हीनत्रा ४५॥ लंगति सृमनि दव, सुक लात ४५ क्रात्रा, लमागसर्व लाकानी, लभवय वम ४५ विना ॥
 ॥ ४५॥ ललि गि सृमयहि, सर्वसं हयन कात्र क। लभवाव लमाका भ, लमाय सर्व कात्र क ॥ ४५॥ लनि
 वसुव ववुका, हयवा न्क म स्यापति। सृनवि सृ भजी वायु, सर्वदवा हयन ॥ ४०॥ वनल सृ कृगना थ विधा

गलधर्मप्रभु। गे ला क्रीसुजिनयन सदायेवनसंगय ॥ ५१ ॥ ह य विष्टिन अनलिधुगुलवृत्तानसय
 नृ ०० नृ महाविष्णु याद्ववत मुक्तियादाव ० नापयागा रुयत्रम ० वन थयेनिदवना मनक (थं) इनास
 नना कनकहावयाव पृथिसुमनयागा ० अथवर्षा इना आयनिसर्गागेमनिद्वलयाल कर्हाकात्रण
 मामवव सदिष्टिगिसर्गात्र नका आकाश नास निव बुद्धा विष्णु वदुह्य अग्निवर्ण विष्णु कर्मा समर्ण
 चनथा लक्षकावधला ०० नृ नाना नायनयाद्ववत मुक्तियागा थुलोका (म) दानसुद्वियागा आयनिकल
 थालकाडाधला ॥ ॥ श्रीगवान्वावा ॥ काद (म) दानवमक किनामकिद ममव किस्मर्न नस्यदृष्ट स किमी
 यध्रयनामी ॥ ५२ ॥ यत्रम ० वन आकादयकना ह य विष्टिन ०० नृ याद्ववत अनथ (थ) वेया ह ०० नृ

५॥२

[illegible]

दावती नाम गुरु हि नि नि वा सि ना । द व ता नि नि र्जि ता ॥ सर्व सु म्ने स्य वा सि ना इ ति ता ॥ १७ ॥ अ र्क दे ह्य
न च दा व ती ध का शी ता म त ग न दे य क त्रा श्रु ता धा ना स प्लू ण सु म्ने स धा द य नि ज य त्र य ता ॥ ॥ सर्व
मा सि क र्क र्क न नि ह्या नि ह्य उ ना र्द न । भ क्त स्य व व न श्रु ता का र्प व क्त उ ना र्द न ॥ १८ ॥ ह उ ना र्द न ध
गु लि ष का न न ख व गु लि म र व गु लि ध र्क दे ह्य स प्लू ण ध व व म्ना भ क्त ता ध ध र्क तु या व व न दे ह्य
व श्राम हा वि षु का व ता ला ॥ ॥ आ वा स ध व उ वा च ॥ वि श्व दा न व सर्व द वा ना क र य क्त ता नि द ले ॥ १९ ॥
ना य र्क ज ग ता सो स्र व भ व ॥ ॥ द ह्य द व ध्य द ह्या नि क र्क न म्ना य न वी य र्क व र्च स र्क मालि दि व य र्क
ल म य र्क ॥ २० ॥ अ न लि ध र्क दे ह्य द व या त र्क ध र्क व र्क य र्क र या शी धा द द्या उ न स्या य ध का व

॥ २१ ॥ आ या द व य न भ भ व न ध र्क द व ला क य नि भ व सि र्क व या व य र्क य न व र्क व ल स ध र्क दे ह्य र ता ना ध र्क
लि द व या धा ल द य र्क य ता ॥ ॥ ह न्य मा ना ॥ सु ना सर्व दे ह्य ध र्क यि षु न य न नि र्जि ता द व ता सर्व ग ता क र्क च दि ॥ २२ ॥
द ॥ २३ ॥ ॥ ॥ अ व ल स स प्लू ण द व य नि दे ह्य न क या शी ज य त्र य ता वा ल वा ल द व य नि र्क व ल ल ल ल ल ल क र्क
गु लि दी ग र्क व ला ॥ ॥ ह नि नि नि क र य र्क व वि षु ति क र्क ति क र्क व क र नि नि क र य मा स का ध द ग न च क र्क ॥ २४ ॥
अ न लि य न भ भ व न म हा वि षु आ क र दे ह्य र ता ना व र्क दे ह्य उ व र्क र्क य व र्क ध र्क ध र्क व र्क व र्क व र्क
आ क र क र व न ध र्क ॥ ॥ आ द न व र्क ना वा न म म वा र्क नी नी क र या न क र्क स म्ना वा र्क धा ना द र्क व दान व ॥ २५ ॥
अ न लि म हा वि षु न ध र्क य र्क व न ध र्क ध र्क ह र्क दे ह्य र्क गु ल वा हा या य ना क म स्य या व उ व र्क र्क र या व र्क

स्थकावहर्कला॥ ॥ रुच्यं गीरिद्युतावायं सर्वदृष्ट्या सात्विका चर्क विमूकवान् कृष्ण देह्ये न्ययुयालुव॥ ५३॥
 हृद्यालुनय न अलं लिख्यति सद्ध व न भ (थथला हृदयं कृमिर्मा थकादृष्ट्या वेयालव को वधया ५३
 ननव कुनय हा नयाका अगुलव कुन देह्यु (ने न्यसुता॥ ॥ ननक्ति त्वानि न मे न्य सर्व मे न्ययुदानव॥
 हंनो गुचीं दं गृह्य युद्धमानसु दानव॥ ॥ अवेत्तस अगुलसुदर्भनव कुनवा कत्रिं हलाव संपूर्ण
 देह्याकपालभाकदना थथथवस न्यरु करवाकाव मूनदेह्यन नववाक मदा आकाशयुद्धया न वला॥ ॥ विष्णुय
 य (भग्नसुद्ध मरुवल्लय नाकम। उकी गदानवी नृद्ध युद्धमाना मूकमद॥ ५४॥ अलं लिमहा विष्णु न इ न सी मून
 देह्य आयुद्धयाता शयागदा धंध धाव रकाकाव विष्णु नमन सविन नयला॥ ॥ अर्क चंदक र न न हसिनामधूस

ग्रा १९

दना निर्जिह्य व गभा व वाह्ययुद्धययात्रिर्ग॥ ५५॥ वाह्ययुद्ध कर्त नन दिवा व र्षसहस्रक। विष्णु
 अर्क समात्रा कु नका ४ सर्ववदवता॥ ५६॥ अलं लि आकायनम न्यन न देह्य अगु नगदामसूद
 कृलाव भाक थूलकला अर्न लि थर्क देह्यदवया दाल छिदागा रुन विष्णु वयुद्ध याकाव विष्णु रता अर्ल
 लिमून देह्यन विष्णु क रीकाव देवयनि स क र्म ग्राहवा ला॥ ॥ हादति क नृण कृत्वा दवसे न्या न्यया
 लुव। विष्णु ग्रासि न क न गभा वदलि का शुर्म॥ ५७॥ अलं लि थगु ल युका नन हाहा का नया काव क नृण
 भादनहा लाव देवया ह न्यदका व व स्यावाता मरु विष्णु न सी आका देह्ययाग्रा न वदत्रि क दावधया गूलनिः

र्थस्वदविकाशमसविज्ञाना ॥ ॥ गुहाभक्षवतीनाम, तनुसुधाजनार्दन, याजनदादभमध, एकदात्र
 यथिष्ठिन ॥ ७७ ॥ हयविष्ठिन, अललि अक्रामहाविष्णुन, अमुत्रवदविक्रदान आधुमस्, भस्वनदूयावगुहा
 कृगुलदयकना, अगुलेगुहायानाम, भस्वविष्णु, अनायनभस्वनभयनयादावविज्ञाना, विज्ञानजिसनया
 जनदयका अ, गुहादूयाव, दूवालेकृगुलदयकावतला ॥ ॥ अहं सुधा, यिना अदु, एय हीमानभस्वया, दा ॥ १२
 नव ४ यन्मलर्ग, यविष्णुमहमीगुहा ॥ ७८ ॥ हयविष्ठिन, यथिष्ठगुलेगुहासददावयादानकयाद, जनलय
 वाया, अथलसुधादेयन, यातिकि यनिकि, दिनसगुहदाव, अगुल, गुहासवला ॥ ॥ प्रसूयकृदहनिः

दृष्ट्वा दानवनसमूर्द्धिनं, गुहाहनिमयादृष्ट्वा, यविष्णुकलुकेयथा ॥ ७९ ॥ अक्रादेयन, माहाविष्णु
 यनभस्वनददाववादादाव, अललि धुमनदेयनयर्वासा ला, ययाव, गुहासर्वगु, यनभस्वनदव
 र्वना, यदेयकलुगथकर्थवीना ॥ ॥ मानयासिन्हादेहा, अमृनालार्कयिकनी, निमित्ताकन्यकावगुम
 मये वनीन ॥ ८० ॥ दयवतीसासोरागम, दिव्यपिहृनभमृधा ॥ अललि, अक्रादेयन, मननहानयला, थका
 अन, अमृनयनियुक्त, अर्ध, स्यायधकावयादवनस, अशानीनन, कन्याकृष्णात्रिसुन्दरी, सक्तजादावविहा
 वना ॥ ॥ विष्णुन ४ समूर्द्धना, महावलयाकमा, गयाचमिहनादेया, मृगानाभक्तियालेव ॥ ८१ ॥ हयविष्ठिन

सूर्य तारा दृष्ट्वा ननु स्यात्तादिहा गता सह त्रिष्यगिर्गुला क् सुयुद्धं जनार्दन ॥ १८ ॥ अलीलिथ क्कार्दे ह्यनस
मनवयाव यनभभवनविष्णुददा वधाटखाटाडा अनावना गुलाक्क तर्थासहाययायगुल ॥ १९ ॥ क्क्यायाववया
ढा अवनसक्तु नथात्रयाभत्रीननअडत्यनरुयाव थक्कार्दे ह्यजनस्याकावकाव कन्यानवना ॥ २० ॥ मस्यासु
दवर्नभ्रत्वा विष्णुद्वनमसवीरु कस्मात्कुभायुकावर्त ममकाव ॥ २१ ॥ अलीलिविष्णुन थलि
कन्यायाववननकाव यनभभवनन आह्लादता रुकन्याव नरुनाकाव व नृणावायाव क्क्याकनिनउयकाव
यादा ॥ २२ ॥ अरुध्रनिर्कुभायन कर्धत्तयानियानिता विष्णुमुववनभ्रत्वा कन्याववनमवुवीरु ॥ २३ ॥ रुकन्या

भा १४

अक्का क्कार्दे ह्यन अगपाद द्ददावगला अक्कादे ह्यनग (धभाव कावकाव विष्णुन आह्लादता थठका
व कन्यानवला ॥ २४ ॥ अकादसुवाच ॥ अकादभा अहविष्णु नयदहसमृद्ध ह्य क्क्यायमानववर्दद्वयुस
फध्र जनार्दन ॥ २५ ॥ रुविष्णु कुलथालसदहनउत्तली रुवक्का अ अकादनिधकावनामथुका सयूर्णुदव
यावलदूकखाकाव कुलथालभयनयाकाव वधाटखाकाव अकनृणावाया ॥ २६ ॥ विष्णुना केवुविष्वाभा र्वा ह्य
ग्रामे वदानवा नीहगसर्वदवानी त्वस्यसादा जनार्दन ॥ २७ ॥ रुविष्णु थक्कादे ह्यगुलाक्क र्गवलनाक्क गवभा
कावकावयुक्कानि रूला सयूर्णुदवयादभक्त रुयावधाटक्का जनकुलथालसयुभदनभावका ॥ २८ ॥ गारु

अ०१

[illegible]

दन। सर्वसिद्धि रूपा रूपा। यदि तु ह्यसिद्धि रूपा ॥८८॥ उयवाप्तस्य सुखं न स्याद्व न कृष्ण जनी ॥ हविष् सुख
 रूपा न, अगुलदिन ॥ ८९ ॥ हकि या द्य ॥ उयवाप्तस्य सुखं न स्याद्व न कृष्ण जनी ॥ हविष् सुख
 लस्य नयुभन रुयमल, उयवाप्तस्य सुखं न स्याद्व न कृष्ण जनी ॥ हविष् सुख
 उक रुकस्य कावक ॥ ९० ॥ न स्याद्व मन्त्रदा न धर, भा कृदही रुना दन ॥ हवि
 वुस न कृष्ण जनी या द्य न ग्वगुलीयु न दन, उगु ल्यावकि, उक रुकस्य कावक ॥ ९१ ॥ हवि
 न कृष्ण जनी या द्य न ग्वगुलीयु न दन, उगु ल्यावकि, उक रुकस्य कावक ॥ ९२ ॥ हवि
 न कृष्ण जनी या द्य न ग्वगुलीयु न दन, उगु ल्यावकि, उक रुकस्य कावक ॥ ९३ ॥ हवि

॥ १७ ॥

कल्याणकाटि भगानिव। लस्य सादन (गविन्द, नादृर्भ कृष्ण मय ॥ ९० ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥ ९१ ॥ हविष् सुख
 कर्कस्य न, कल्याणलस्य न, ग्वगुलवेक ॥ ९२ ॥ न स्याद्व मन्त्रदा न धर, भा कृदही रुना दन ॥ हवि
 नया द्य ववि द्य मालव का उ, उका दन न धर ग्वगुलवेक ॥ ९३ ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥ ९४ ॥ हविष् सुख
 ॥ ९५ ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥ ९६ ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥ ९७ ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥ ९८ ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥ ९९ ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥ १०० ॥ हविष् सुख रूपा न, अगुलदिन ॥

^{वि ३०}
 यिव अर्धं स्य न धं गुलवर्गं त्रायशायकाव (११) ॥ त ३२ एकैर्महं मन्त्रं एकादशिवृत्तं लिखितं त्वयि
 शं कलिष्यति एकादशानर्भय ॥ २३ ॥ हि एकादशा ग्वर्धं स्य न धं गुलदिनसं कं गुलवृत्तं द्वाव धावा
 अथ कृद्वा ऊयुजायायिव अ ऊ एकैर्वकाव (११) ॥ सर्वतिथिवृत्तं त्वत्पुसादा रविष्यति सर्वसिद्धि
 रव हस्य एकादशमध्याधिति ॥ २४ ॥ रु एकादशि ऊ गुलपुसादनस्य पूर्णं तिथिस्तव वनिव कृतं गुल
 दिनसं उया भानवा द्वाव स्यात् संपूर्णं सिद्धिदयीव ॥ ॥ त्रययिथ कं धिनि एकादशमदावृत्तं एकैवायदिवा र
 का संपूर्णं अधिय त्त ॥ २५ ॥ रु एकादशि मर्वं रावं (११) स्यं म (११) स्यं यत्तं ग्वर्धं न संपूर्णं एकादशिवृत्तयाय ॥

श्री ३०

२३

॥ ॥ हृत्पादियानर्कं वि त्वा ददामिय नमागति सर्वविवृत्तं न स्य सर्वसिद्धिददामिव ॥ २६ ॥ रु एकादशा उायनीत्
 वृद्धं रु त्वा अदिपयायसु स्यात् तवर्धं गमिलात् रु न विष्टुर्हसि कर्ता सिद्धिलात् ॥ ॥ एवमुक्तं भावाक
 पुन न न प्रधीयत एवमकां भायार्थं सर्वयाय दय कनी ॥ २७ ॥ हृत्पविष्टि न थ (११) रु एकादशा ग्वव लभ न स्यात्
 याव ऊनमस्त्रया द्वाव थव थ सवा एकादशि थ या क थ थिठ एकादशिवृत्तया दान समस्त या य दयिव ॥ ॥
 एव सावमहायुष्म सर्वदवमु वदिता यजिनाम ह्य लाकव सर्वसिद्धि कनी तिथि ॥ २८ ॥ हृत्पविष्टि न थ गुलि
 युकावन एकादशा धवयनि स्य मानयया ता म ह्य लाक स द मानयया ता संपूर्णं सिद्धिविद्युलतिथि एका

दनिधकाव(म(म॥ ॥ शुक्रावायदिवाहृष्ट विरुदनेवकात्रयत्। उरथाः पक्ष्याः पार्थ समभकादभात
नी॥ २२॥ हयविष्टिन् शुक्रयक्ष्याश्वनी, कृष्णयक्ष्याश्वनी, उकादनिक्कूनिना हाननवाकावव्यर्क्ष्यन
दादनिक्कूयात्रनयायव, पुगुलवगकवलविष्णुया, तवकादवुतवकाव(म(म॥ ॥ यमिग्रससुकेः ३०० कि॥
लिवरुक्षयत्तना, उकादभाः ३२ याश्वन्याश्वकेहविवासना॥ १००॥ हयविष्टिन् गवर्क्ष्यन, उकादनिक्कूहनि
वासनक्कू, अन्ननयमभव, अन्नसयायवानिवधकाव(म(म॥ ॥ समादायविधानन, दादनिवुतमूर्द्धमी, नस्यह
नन० कृत्वा, भोत्रवन्नवर्कवुजत्॥ १०१॥ हयविष्टिन् विविध्यं, उकादभातुतयाकाव, दादनिक्कूविविध्यं पा॥

वनयाय (गम्यं) सनमयागसात्रो वनकं गवानिवधकाव (गम्यं) ॥ यदि द्विदिप्रावाभं सु न सम्यद
मसन, एकादशान्तुं ज्ञानं पक्षयान् रथानयि ॥ १०२ ॥ हयविष्टिनं स्वर्गस्य न भु खसं पति, धर्मया
यन्तुं द्या यागा, डादं सन, न गुलपक्षं, एकादशाकुद्रु नयमभव ॥ ॥ लाहादायदि वाभाहा, रथादा
यभ्यमानवा, एकादशं तुं ज्ञाना, विष्णुना कं नय ॥ १०३ ॥ हयविष्टिनं, लाहं कनसां, अज्ञान
नरुवभं, हयनरुवसां, एकादशाकुद्रु (गम्यं) सन अर्ननवा, डादं सन विष्णुना कद स्वानिवमसु ॥ ॥
अतिकुंमनियभाहा, दकादशमिनामिना, उत्पवाभं समु कत्मा, विष्णुना कं नय ॥ १०४ ॥ हयविष्टिनं, ह

अथ निर्यान् भगुनयकर्स, अज्ञानन, एकादशा कुरु उयाभननमवाना, आयनिमूर्खभाय, आयनि
 स्यादिविषुनाकस्वानिवमस्व॥ ॥ उद्धरायसूनायभ, सुयीचगुन, नल्यगभविहृदयनियमाहा, द
 काद, एभिनिगानिग॥ १०९॥ हयविष्ठिन, (भयनिर्यान् भगुनयकर्स, अज्ञानन, एकादशिकुरु उ
 याभनमवानसा, उर्कस्यनवक्रह, थ्यादि, सूनायान, यचयायनाकभाय॥ ॥ यविष्ठिन उवाच॥ भु
 क्का कुरुनभारगाना, द्वादशाकनह, गुना॥ किंभुक्का रग्यापियादव, किम्व कुरु गुपूजिता॥ १०९॥ य
 विष्ठिननग्रा कुरुयाक, नाययागा, हयनभभवन, कुरुनालस्य, भुक्कयकया, कुरुयकया, ए

कादनि उर्निधकाश आदादता आवदादभाग्यगुल गुक्यक्याना कषुयक्याना नवधादथ
गुलधकाव काटाववि आयमाल कयादनि नमभटावकावेदटा ॥ ॥ शु कषु उवाव ॥ यथाभुक्ता
नथाकषु द्वादभाभसद यिया ॥ शुक्ल गृहमे ॥ क रुथा लागसना नवद्वेनी ॥ १०॥ हयविष्टि ॥ शु
क्यक्या इव ॥ कषुयक्या इव ॥ द्वादभा अनसदा दमभटा विसयन थलिबका गृहमे इला
अयनिर्ह्य शुक्लक्या द्वादभा मानययायमाल थगुलियन नमसु लागं संतानवाधनयीव ॥
माकसार्धे न कषु वगंभनायवासिनी ॥ कादभा ननु अंश यकथान् रुथा नयि ॥ १०॥ हयविष्टि

न ग्वयनिगृहकृमशत्रा यागिस न्यासि ०० एादियनि निवाहावननवाक वानि ॥ आयनिसां कृषु यक्षया
 हादभामानययाय एकादशिकृद् न गृहियक्षसिनयमभव थथयाकानमाकृदव ॥ १०॥ अथार्थ
 सदाकार्या नलाश्रसंकभ वृषि। कृष्ण नैमिहिकीह्या उतमव नलूयन ॥ १०॥ हयुधिष्ठिरसंकनशत्रुभां ५१२०
 गुह्य यक्षया एकादभा सर्वदामानययायमात् कृषु यक्षया एकादभा गृहकृनमानययायमभव कामना
 नतिनभव थगुत्रयकावननगुत्रय यक्षया एकादभानवान ॥ ॥ गयनीवाधनीमक्षा या कृष्ण काद
 भारवगु। सेवधाव्यागृहकृन नान्यकृष्ण कदावन ॥ ११०॥ हयुधिष्ठिर (गवत्रस विष्णुगयन (गवत्रसउ

एान ग्ववत्रस उवखवमयूला थगुत्रधनस कृषु यक्षया शत्रुभां एकादभा गृहकृनयायमभव भवर्गा
 भव ॥ ॥ एक न्यामयवासध ३ कृष्ण कादभावासत्र। वनुसूर्यग्रहत्रेव नकुर्यात्प्रहान गृही ॥ १११॥ हयु
 धिष्ठिर ग्वक्षा गृहकृ शत्रा पुरुसंनान ग्वक्षायादगा आकास्यन संक्रान्तिकृद् कृषु यक्षया एकादभा कृ
 दू वनुग्रह लकृद् उयाभनवानमभव ॥ ॥ संक्रान्तिकृषु यक्षु त्रविशुयुदिनतथा एकादभा त्रः
 कर्वाग उयवासध ३ यावर्ण ॥ ११२॥ हयुधिष्ठिर संक्रान्तिकृद् कृषु यक्षया एकादभा कृद् १० कवात्र आदित्य
 वात्र लायुअकृद् उयाभनवान यावननयायमभव ॥ ॥ ०० नृक्षय कर्मा कु भो एकादभा भिभनन

५२१

५२१

निरुद्धं मामववृयासंवाच न रुद्रसा, थथिहर्षं क न स ग्वगुलस्य का व न धर्मदानं, थ गुरु न भ्रमनससद
 रुद्रव, रुद्रलथालस्य न काळा ववि श्रयमाल॥ ॥ गृह गवानुवाच॥ सा गायित्री ४ रुद्रया वी, रुद्रलथालका
 दभायदा। वृद्धं थथिरुद्रवाच, न कं न गुविधीयत॥ ११॥ रुद्रयिषिष्ठिन, ग्वरुद्रं, मामववृया अष्टदिन रु
 यावधानिव, अकुरुत कादभा नानसा, यिनत्रयनिकामात्र क अष्टया दाव, दवयामालका यज्ञाया दाव, वा
 क्कलशा जनधनकाव, न रुद्रुदभनया दाव धर्मनया॥ ॥ यिषिष्ठि उवाच॥ नृत्नीरुद्रयुना लानी, रुद्रा रुद्रा
 यियत्त नानशक वी न शक वी, स्यात्त रुद्रि वा भव॥ १२॥ रुद्रा रुद्रा सानस गुरु वी यज्ञानदव, वददव, अलिष्टं

ग्री ४, सू ३
 ११॥ रुद्रयिषिष्ठिन, ए कादभा कुरु न गुरुलथ कर्षं नयमभव खवख, गृधर्न ग्वधनसद ४ रुद्रमाल्य
 अष्टदिन रुद्रय, अकुरुत कादभा लानसा, उया न नमाल, सखयाना खरिवा नाना॥ ॥ यिषिष्ठिन उवा
 च॥ स्वया अष्टदिनि दिष्टा, स कादभा विभवेन। कथं अष्टं पिहन्म ध्रु, उयवास कथं रुद्रन॥ १२०॥
 रुद्रं रुद्रं नथा न स्याद्गया धया वत ला, ए कादभा कुरु, अष्टु दिनलात्ता, रिन कावराव थिरु रुकि
 याय, अष्टयायमाल, थ गुरुलथस अष्टु गृधयाय उया न न गृधवा भ, धर्मं दह, रुद्रलथालस्य काळा
 ववि श्रयमाल॥ ॥ गृह गवानुवाच॥ अष्टु कुर्याद्विगं कुर्या, दाद्य (थ) यिरुसेवनी, ननायवास नियमः

卷二

नैलिवासा अहदानविय, धुगु नयकावनयाय॥ ॥युधिष्ठिरवाच॥ एकादश्यायदात्रामसु
नकम, नकयिवा। ननुधर्मकथं कुर्यात् कुहिनस्य जनार्दन॥ १२४॥ हंशकृष्ण एकादशिकृद्, जयवालिमालि
व, दृष्टमालिव, अकृद्ग, थयाय, धुगुलच्छलधालस्य कादावविश्रयमाल॥ ॥शकृष्ण उवाच॥ सूतक
मृगकवायि, यद्गु कालयुधिष्ठिर। एकादश्यां ननु कुर्यात् यदथा नू रयानयि॥ १२५॥ हं युधिष्ठिर, जयवालिमानवर्ग
दृष्टमानवर्ग, यद्गु शनवर्ग, एकादश्या कृद्ग ननु नयकसंनयमनव॥ ॥न शोधर्मस्य शायद्गु, स्यात्तामससु गयि
यानस्यैकादश्यायुष्मा, यदथा नू रयानयि॥ १२६॥ हं युधिष्ठिर, नूनमवता, धर्म, यद्गु काम, काय, भावा, मु, भा

नमः श्रीकृष्णाय नमः, ५५ कादभिकु गु व न नर्द्ध न गु लय क र्ण ग व न म न व ॥ ॥ यदि कृदियु न वा स, पूरा ल म वि
 स न मि। ५ काद भान नु ज्ञान, य क था नू र था न वि ॥ १२० ॥ ह य वि छि त्र न व क ष थ स वा य गु ल ०० क्का द न सा, ह
 न का य मा वा, न कान या ०० क्का द न सा, ५ काद भान कृ द्वा न य म न व ॥ ॥ सु न क र्धे व ह र्धे वा, क ष वा स मू य छि न। य व
 व क्रा ग न वा (ग, न ह्य क्का द भान व र्ण ॥ १२१ ॥ ह य वि छि त्र, ज य वा लि श व र्ण, दु ४ स्व मा न र्ण, क र्ण श व र्ण, य व व
 कृ या ह य द र्ण सां ग न क व र्ण, द्वा द भान व र्ण (ग ल न र्ण ल न म न व ॥ ॥ सु न क र्धे व ह र्धे वा, य ल म म न स ह वि
 । ५ काद भान नु ज्ञान, व न म र्धे व न ल य र्ण ॥ १२२ ॥ ह य वि छि त्र, दु ४ स्व मा न र्ण, ज य वा लि मा ल र्ण, स्ना न या वा, व,

ग्री २४

वि ५

मन न वि वृ या स म न ल य वा व, ५ काद भिकु द्वा उ या न न वा दान व र्ण वा क ॥ ॥ द्वा द भान न न वा दान व र्ण वा क
 का न क न र्द न, य ज यि त्वा वि ध न न, ल उ थ व दि श र्ण म ॥ १३० ॥ ह य वि छि त्र, उ र्ण लि द्वा द भान कृ द्वा य व
 न या वा व, दु ४ स्व र्धे व न लि, ज य वा लि व दान लि, ल व र्ण क र्धे व न म र्धे व वि वृ य ज या य, न क न वा व (थ वा
 क ल श ज न या न क ॥ ॥ अ स म र्धे व न र्ण, व न व स मू य छि न। का व र्धे व र्ण ली सा, ल्प वा वा, ५ काद भान
 न ॥ १३१ ॥ ह य वि छि त्र, न र्ण र्ण र्ण, उ कृ द्वा ५ काद भान कृ द्वा, उ व ल स, थ व ०० ह यि त्वा य दान्ती श व र्ण, का य र्ण
 व र्ण या व क ॥ ॥ ल य र्ण र्ण र्ण क र्ण, क र्ण या र्ण य नि स थ। अ स म र्धे व न र्ण, ल र्ण, व न र्ण, न न ज य न ॥

१३२॥ हयविष्टिः स्त्रीया भवती नल नम जीवसा पृथुषन दानं पृथुषया भविष्य नमस्तिवसा स्त्रीन दानं थ
 थव नयाय भव उकाद भाव गुरुय मठव थथया दान धर्म मयूक ॥ ॥ ॐ लु कय र्क स नाना व का
 द धर्म निग नव उपवास न कर्तुं न युग दात्रा व न कुर्य ॥ १३३ ॥ ॥ हयविष्टिः श्रमावा म्म क कुर्य भि कानि
 भ कुर्य य कुर्या उ काद नि कुर्य अदि लु वात्र द्वाद भात्रा तसाया ल नयाय म भव ह न मय न कुर्य भयी
 लु दानया नसा अ क्य पूरु भायव ॥ ॥ उपवास निषिद्ध ह कर्कि वि ल्य क स भ न न द्वा मय वा स न द्वा
 वा स र्क ल ल ह न ॥ १३४ ॥ ॥ हयविष्टिः धर्षि व व स या न व स द व गु व न य माल मन स धा न म भव उ या न न वा

धारा

का थ र्क व न वा य ॥ ॥ अष्टे ता न्य व न द्या नि श्र धा मूल र्क ल य म ह वि द्वा क्क ल क र्मा व गु थार्क व न मोष
 र्क ॥ १३५ ॥ हयविष्टिः थ द्या गा न या न उ या भ न धा का थ ध र्म म रू क नार व भ कि र्क ल द्वा ध न वा
 क ल य डा क र्म क र्क गु व या व च न वा श न थ द्या गा ॥ ॥ न क र्क वि द्या न म भा द व ध र्क र्क ल र्क ल
 क्री व म थ म्म नार्क य ल क्क ग र्वा य दी वा थ वा य य म ल म भा र्क व म र्क र्क व ॥ १३६ ॥ हयविष्टिः व न ग ति
 स्या न लि न या गु व न क धाय मा व र्क र्क वि द्या थ य क न्द मूल श्र भा द न धाय ल म ल र्क ल द्वा ध न
 र्क व ग वा अ थ वा र्क ल वा य क न र्क थु लि या ल उ या भ न म धा न र्क मू ल द व थ क्क ना क्क ना या य र्क ॥

॥ हविष्य शक नैस्तान् सत्यमाहावनाद्यर्वी। वृद्धवर्चसधर्मार्थं कृत्वा वैवायव्यं हनि ॥ १३० ॥ शक हं पृष्ठ
 जीका कृत्वा न भर्तुं वा गुण ॥ ॥ हय विष्टि न, हविष्य शक न, सत्य आहावनाद्यर्वी, वृद्धवर्चसधर्मार्थं
 मिश्रधर्म, धूलिद्वयकृद्वाकाव, हयवर्चसधर्मवकाव, वृत्तया आह्लाकायाव, असकायायमालधकाव,
 लावन, नमनधान ॥ ॥ इति वृत्तग्रहणं ॥ ॥ असत्य लावर्ण्यं द्युर्तं दिवा सद्युधर्मं धर्तुं। नृकाद ॥
 न कर्तुं, उयवासं विन भ्रति ॥ १३१ ॥ हय विष्टि न, शक न, सत्य आहावनाद्यर्वी, वृद्धवर्चसधर्मार्थं
 ग, नृकादभा कृद्वाकाव, उयवर्चसधर्मवकाव, उयवर्चसधर्मवकाव ॥ ॥ सधर्मवर्चसधर्मवकाव, लावनधर्म

श्री २५

वर्चधर्तुं। दभादिष्टविलग्नानां क्रमस्यमधुसूदनं ॥ १३२ ॥ हय विष्टि न, अनलि, ००४० वया क, थ (थ
 धूलिवमुक्तवगुलया क्रमाश्रमं कृत्वा, लसकाकाववस, मुर्तिशानगशय, सत्रिकानकनान्
 वयसवान्धुव, धगुनधगुनवमुक्तमायायमालधकावधर्मार्थं ॥ ॥ असत्य लावर्ण्यं द्युर्तं दिवा सद्युधर्मं धर्तुं।
 सद्युधर्मं धर्तुं, उयवासं विना गता, दिवा सद्युधर्मं धर्तुं ॥ १३३ ॥ हय विष्टि न, वार्चवाव, नार्चवाव
 न, ग्यवनयान, नृकादभा उयवर्चसधर्मवकाव ॥ ॥ कां भर्तुं भर्तुं भर्तुं भर्तुं, वनर्चकाद्युर्वनथा
 भर्तुं भर्तुं भर्तुं भर्तुं, वरुं यद्युयवर्चसधर्मार्थं ॥ १३४ ॥ हय विष्टि न, अकृद्वाकाव, काभधर्मलासनयमर्तुं व, लानयम

भव, मुसल, काना, दू (म) वादक, कसि, भवा, अन्न, पत्र, मु, धन, भा, नम॥ ॥ कां भं मां भं कू न को ई, लव
 विन, अ, रा, वि, मं, आ, या, म, अ, वा, या, यं, अ, दि, वा, स, यं, न, थ, अ, न, ॥ १४२ ॥ हय, वि, वि, न, कां, भ, म, थ, दा, व, न, य, ना
 व, न, वि, क, सि, वि, रु, स, र्व, य, वि, गु, म, मु, र्, न, म, भा, न, भ, म, म, ल॥ ॥ भार्गव, के, या, ल, म, ना, लि, न, र, व, र्म, नि, ना, नि
 व॥ अ, म्, मा, दि, य, व, र्, न, य, दि, र्, ल, य, न, म, य, द॥ १४३ ॥ हय, वि, वि, न, या, ल, का, न, टा, क, अ, नि, क, टि, लु, मि
 कु, गु, ल, ला, टी, ल, अ, रु, मि, नि, स, थ, लि, व, मु, भा, न, म, ध, व, रि, क, ल, ल, य, न, म॥ ॥ भार्गव, अ, ना, लि, क, ल, म्, मा
 ल, या, ल, र्, व, ला, व, र्, कां, ना, ली, म, क, अ, म, ना, लि, न, र, व, र्, व, रु, सि, लि, का॥ १४४ ॥ ॥ व, र्म, मा, स, स, ना, न, नि

ग्रा २ १

ल, र्, ना, क, भ, व, वा, गु, या, द, म्, न, य, र्, न, उ, र्, ल, वां, यं, य, ल, न॥ १४५ ॥ हय, वि, वि, न, क, या, न, थ, य, न, लि, का
 ल, का, न, ना, क, थ, य, रु, र्, वा, र्, व, (म) ००, ला, दि, अ, नि, क, नि, थ, य, रु, र्, दा, लि, ००, ला, दि, लु, नि, थ, य, नि, मि, कु, गु, ल
 म, म, म, मु, स, न, ००, ला, दि, ला, मि, ल, थ, य, ला, ना, थ, र्, व, मु, गु, या, द, मि, ना, भा, न, भ, म, म, ल॥ ॥ अ, ना, व, र्, न, र्, ना
 क, द, म्, न, अ, म, सु, नि, कां, अ, ना, भ, नां, मु, थ, रु, क, न, दा, द, न, न, थ, ह, नि॥ १४६ ॥ हय, वि, वि, न, रु, व, (म) भा, य, ला
 ना, का, य, न, ना, ००, ला, दि, मि, न, सा, द, अ, न, म, मु, व, थ, लि, र्, व, र्, स, न, न, ना, अ, का, व, य, न, म, अ, व, न, अ, ना, या, क, थ, का
 व, (म) ०० ॥ ॥ थ, ना, य, वि, वि, न, न, ग्रा, क, रु, या, क, मु, नि, या, ना॥ ॥ य, वि, वि, न, उ, वा, व, रु, का, न, ना, दा, न, नि

नथि श्रुद्धयावविष्णुता, श्रवयात्र लडयाभनखानगुन, गुगुनउयायमाला, डागुनयकात्रनका
 कावविष्णुयमाल॥ ॥ गृहगवानुवाच॥ आराकाभितयकष, मेरुश्रवणनवनी, संगभनहि लाकवीः
 यदि चैका नहियभा॥ १५॥ ह्यविचित्र, आचारुभितयकस, श्रुनारुनकणनायिव, लडसप्रवण नकण
 नायिव, कार्ति कसप्रवणनकण, द्वादभा, वधवानस्यैककनसा, नयसभव, थप्रस, कुगुनमनासाधव॥ ॥ श्री २८
 कभगुमानुनादाया, प्रवत्यांदायप्रवचा, कलोप्रवणसम्यन्, ०० ह्यदमनप्रवतीनु॥ १५६॥ ह्यविचित्र, स
 लकगस, गुगाकगस, अकक, श्रुनारुनकण, द्वायत्रकगस, द्वादभालाल, प्रवतिनकण, कलिङ्गगस, द्वादभा

ग ३,

प्रवणनकण, मारुयभरु॥ ॥ श्रुनारु(ययनि ४ यअ विष्णुयअगृहीसदा, प्रवत्यांवानय ४४४, ०००
 वीमननवविनु॥ १५७॥ ह्यविचित्र, श्रुनारुनकणभजनियू, जायाय, प्रवणनकणभगुरुसू, वाकणयू, जायाय,
 प्रवतिनकणभ, ययिपू, जायाय, थथवकावमननश्रुद्धया॥ ॥ भाकसार्जननाम ५३, कतिनीमूर्द्धनगर्भा
 नसायेववर्तधार्क, प्रवत्याख्यानुनादथा॥ १५८॥ ह्यविचित्र, भाकनायनाइनसा, मनुष्ययनिर्मा, कति, वदसादिय
 नेर्मा, थगुनधर्मदान, प्रवति, प्रव, ल, श्रुनारु॥ ॥ ललु (७३ मलयकस, यथा कद्वाद, भायदि, (मविन्दु द्वादभा
 गम, मारुयानकनाभनी॥ १५९॥ ह्यविचित्र, ललु, लभुह्याद्वादभिकदू, यदनक, लाल, (मविन्दु द्वादभा)

म. मधिद द्वादशा. महापायदू. स्व. ॥ तस्यामृधावर्त्तकत्वा. श्रैकादशाननाभियायाप्रागिवाहमासिद्धि. नू. ल. रायननाव
 गि. ॥ १७३॥ हयविष्टि नहनं उंगुलद्वादशाकूट उपाभनवाहाननवकादसिद्धिनाय. दू. ल. र. गु. न. ॥ तस्यां जगः
 लमदेव. सर्वदेव श्वनाहनि। यत्न कनिययात्याष्ट. गगानन ४८. ल. स. मी. ॥ १७३॥ उंगुननुकादशाकूटयवम
 श्वन. विष्णुयत्न कइयव. प. थयाहनिनवकादहलदव. ॥ त्रनायसिनयनाग. यायनवेष्टु. वंयवीनाशोनाग
 नलीकृत्वा. समुथावद्व. अदिना. ॥ १७४॥ हयविष्टि न. ग्वर्क. सनविष्णु. नाकनायगुन. ००. क्रायागा. डा. क्री. स. न.
 थुगुननुकादशिकूट. नागिन. आगन. ल. या. दा. व. उपाभनवा. न. ॥

३३

त्रि३.

वालत्वयोवनवायि. वृद्धत्ववायिवानव. उपाथो कादशानन. नोतिपाथा. इमि. इ. नी. नी. ॥ १७५॥ हयविष्टि न. वानक.
 डोवन. आ. ०. थुलिवयमम. धर्मदका. न. महापायि. द्वा. इ. न. श. भ. ग. गति. नाय. ॥ त्रहाह ४८. सर्व. रू. न. व. वागमन
 ४. कायक. मी. हि. ॥ इ. दि. या. ल. नी. ला. ध. स. दान. ४३. रू. स. व. नी. ॥ १७६॥ हयविष्टि न. द्वि. द्वि. क्वा. कं. ग. ल. द. ४. सि. द. नि. द. र. ना.
 दाव. ववनन. मनन. कान. आ. न. इ. था. भ. क. द. व. थ. वि. य. य. न. म. श्व. न. या. रु. कि. या. य. ॥ सर्व. था. वै. व. क. रू. वा. तथा.
 दान. ४. की. रू. थ. गु. य. था. भ. कि. स. दा. द. डा. ल. म. न. ना. हि. न. का. म. या. ॥ १७७॥ हयविष्टि न. य. था. भ. कि. न. य. स. या. या. य. थ. व. ना.
 स. व. रि. न. क. ना. नि. मि. स्ति. न. दान. या. य. ॥ उपा. न. द. मु. क्क. म्फ. लि. अ. न. मूल. रू. ल. ज. ली. न. व. श्व. दि. व. र्क. र्क. र्क. द. नि. डा. वा. यि. मा.

एथ शानिव धूलि (मम) वका व धगु व ल का द भिया उय हि वुत धगु व यु का न न शी कृ पू न य वि
 न का द व वि श क रु ला ॥ १०३ ॥ श्री कृ पू य वि वि व र्ण बा द ल का द भि मा हा र्ण उय हि ल का द
 व्या ख्या न ए थ म क थ स मा र्ण ॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्री ना ना य ल य ॥ व य न क भि व नाम ना ना य न कृ पू द भा द
 क स द र्ण ह वि ॥ श्री भ र्ण मा ध र्ण गायिका व ल र्ण ज्ञान की ना थ श्री नाम व लु र्ण ॥ ॥ श्री कृ पू य नमः ॥
 ग मि ना ॥ ॥ ॥ श्री नाम श्री नाम श्री नाम नाम नाम नाम ॥ श्री कृ पू कृ पू कृ पू कृ पू ॥ स म ग ॥ ५४ ॥ श्री
 ग ॥ १०३ ॥ दि न स धू न का वि खी र्ण रु क नाम ॥ श्री व कि मी ना ना ल यी नी ति व म ॥ ॥ श्री रु स मु भ र्ण य ॥
 ना हा द व उ वा च ॥ ४ ॥

श्री ३२

१ ॥ ॐ नमः ॥ निवाया ॥ के ला भ नि र व ला सी न द व द र्ण उ ग रु न ॥ (म) ना थ वा व रु र्ण न वि स मा दू ल ला व न ॥ के ला
 भ य र्ण र स द व य न र्ण द व उ ग र्ण सा न य ग र्ण श्री म हा द व वि श न य र्ण न न म स न वा दू ला व म हा द व स क र्ण
 ना य य र्ण ॥ ॥ श्री य र्ण र्ण वा व ॥ श्री म हा द व कृ ल य न स य सा द न कृ ल य ल स न गृ द्र या द न य व न द न य य नि
 आ द भ द य क न न व ना तु य नि लु य र्ण द न धू ना द न ध र्ण य र्ण द न धू ना मि र्ण ज्ञा ना या द र्ण द न धू ना
 थ द का या रु ल द धू ना थ (ध) न र्ण न य य नि र्ण सा मि आ र्ण द य क स ध र्ण द का या मू ल ध र्ण र्ण रु कि मू

थयतिभिवभिवधर्कन्वाता थयायासासवनन धमूनियनिहासयानं हासयादाव अहववानधर्कं चवनंति
 वनाकायाव क्वविदिदाव थववायात्र अहववनयाद्वृ नयिदावर्तं धनाथयामामन धर्मददावयदिभा
 यावधानं धनासवनधवस्तन (थद थवनस धमूनियानिस्तन सवनर्यदाव धानं यायात्मा थसवनमहायव
 भिवत्रागु थथिददिन कूद्रु अहववननना यत्रलाकस थयाद्रु गगिइयीवधर्कन्वाक थधमूनिन्याकमामन
 नायाव मामन कायगनवानं हायूर धनि अहववानमन सकत्रधमूनियनिलाकन्वाता थथिददिन कूद्रु
 भिवभिवधर्कं क्वायावधानन धर्कमामगीका हायूरवनमनवियत्रितइयू थददवकायनहानी ॥ पण्डवावा

य१

हासाता ऊ अहवमवानसा कयनिद्रु कइयव नद्रुसाद्रु ग (थद धर्कं काववान भावाता क्वा नमायरुव अह
 ववन निधय थनकाययाववनददाव गनमइयाव मामनकाययागा अभिर्वाविर्न हायूरु नकयावस
 इन्दुनत्र कायायमाल बाहासकवननत्र कायायमाल नूगवसवत्यमानत्र कायायमाल सत्रि नसर्वीषि सूर्यनत्र
 कायायमाल यथाविर्नत्र कायायमाल सलिलनिर्मल इयमाल कसननलिहावयरुयमाल इकायधर्क अभिर्वा
 विर्न थवनस मामनमस्कात्रयादाव अहववानं महाकयंकन एरुमवनसवानं नानावगुयीद्वि सिंघ वाद्यु
 दव थथिगववनवनं थवाधन थवयत्राकुमहावं सिंघन थवनानकयर्कभावक धू नथवनानकयर्कभा

वक्, किसि साधु वान कय क भाव क, गल म स न धु वान कय क भाव क, ख, वना वसा, न धु, ह विनि,
 क थु क थु वान कय क भाव क, थ वा धान, थ (थ थ व य ना कु म ह्या या व, व नु दि ग स सा या व, नाना उ नु वा
 व व न स, ध नि म थ न ना ना य ध क वान, अ न ग सु हि ना व कान, थ कू द्र या दि न स, कू र्त न य म दू, सदा अ न
 क स सा व सा न य द व, ना ख, कू र्त कू ल या ना य म दू, अ वि कु म (थ, न ला व वि भा, कि कि ट व ना, न य म दू, सदा अ
 न क रु ल द व, य हा क, कू र्त न य म दू, कू द्र म य नि कू धा न ना, द नि दु क या, थ न न उ य वा स न अ ह न व या, थ (थ
 कि कि ट कू ना ट न य म दू, थ (थ कि ना लि व क स न, ना ना य म दू या व, लि वा दा व थ न लि, थ वा धान, कू लि हा

वय, अ व न रु या व लि वा भा ध क, सि द वा द्यु कि सि या रु य न, ना सि स भा व क ह व ध क, थ य सान, य रू लि:
 क गु लि व र्ण, (थ य रू वि स ल स भा दा व, काल मा या द लि स, थ वा धान, या यी य या ना थ य कि न क र्ण, थ गु
 लि थ य स, स य रू लि ग कू र्त द व, थ व न स थ वा धान, थ व ना थ य कि न क नि मि रि न, या न य गु वा या
 रु दा व कू या गु लि, मा हा द व या नि व स र्ण, थ वा धान, अ न रु ल कू ना ट म न व, अ ह न रु या व अ दा न
 न वा दा व, वा क न वि क न सा या व, कू र्त म व र्ण, थ (थ वा न मा या द वि स, थ वा धा था दा व कू य रु न वान ॥
 थ न लि थ य रू वि स, मृ ग कू र्त गु वि नि, ल स भा न या, व व व न स, थ व न स वा धा या वि कू रु या व, नि व नि

श्री
श्री

काव, अश्वनायक, वनवर्ष, महादेवस्य नन्दया याव, अश्वनायक, (गर्ववत्, वृत्तं, स्ववत्, लिंगवत् नयायाव, धव
नस्य वाद इत्याव, धर्मवृत्तायाव, वृत्तं नद्वयं जन्मस्वप्नमानीव, जन्मनया दान, कृपयनिमृक इति वधकं, अश्वनायक
शयाया अनेकवर्षवाना, वनान्नवरुमवर्षकया, जन्ममहदिवसखादा, धर्मयुर्व जन्मयायायमस्य, धर्मद्वयं
न्यायस्वर्गस्य, शयाया वि (गर्ववत् जन्मजीवस्य दव, वाव रुखा नाय, जन्ममहिम्न, दुःखदयवगदीव, कुरु
वर्षा, जन्मनश्च रुक्मिणकव, भवकं वनावय, दुरु भव, ल्यास, यायाया कथनवय, विसरन ज्ञायायमन
व, सनीवसाज, कनसभवर्षमायावयकाव, नाथव, ज्ञावावकससि जन्मनिववकास्य, कनसभवर्षजन्मकव

यस्यागकन, ज्ञायायकं कया, धर्ममावनायाववनद्वयव, व्याधकोमु कयायावधार्म, धननकुरुव
धवजीवनवधनिमिरिन्, यायकं कया, कनवय, कनधवदाव, भवमवः, धर्मन जन्मदुसुव
नकयनि, अन्नमदन, कृष्णनपी उवयथानीव, धर्मनकसनेवर्षवयमाल, कनमायावयकं नाथव, ज
कवयमाल, सयथयाकावदूनी ॥ पृथिवी, वायु, सूर्य, आकाश, सर्वथुका, विवनयाना, धर्मार्थ, हृमगनीस
हयुनियानयायमाल, धर्मव्याधनधयाववनद्वयव, धर्मगनीन, वयधकं, कलवान, व्याधयाद्ववन्, स
यथयानी ॥ ॥ मृगनी उवाच ॥ शयाया, कनद्वय, जन्मसयथयाय, वाक्यल ज्ञायाव, वद्वययमथादायायाय

ली
श्री

वदमसदायाय, वदमथानयायाय, मष्टनयावइयायाय, त्रिवासागादानकयायाय, अरुहयायाय, थ
ननानावधन, मृगनीनस्यथयातं, थवाधनदादाव, वनाभावनतावधलं, थवनाभावनतावकयायाय
न्यन, अरुहाननलिं गयूजायादायन्यन, वाधया, यावासुद्धिवायायनभावनतं, थनलिवावाजायाववानं, थ
वाधननिवशिवधकंथानं॥ शयावर्गनी॥ थनलिहर्नलिथूधंमावनावर्ग, ग्याग्गद, यावदत्रिसवाधवा
दखंदाव, पुनर्वादवाधन, यावयगुयावादुदाव, कयागुन, शिवलिं गयासिन्सुतं, शिवशिवधकंथानं
थसुनतायाय, मावयानखंदाव अंधावनवानं, पुनर्वाद, थवाधन, कुरुमुभावाता, यासुनथनिमिरिन, दध

थ१
नशार्च, वाधन, वनाखंदाव, वनादायाव, ह्यायर्गनदुर्गा, थववाननित्रयर्ग, थवाधन कृततास्यागा
खसभ, गतायासाकनयीदवयाव, विनत्रयाव, वाधहोतं, हावाध, धुनधत्र, वाधया (गु) वृद्ध, समस्त
याजिवभाचकंथोदकं, अनकृताखंविनतियादकन, कनकतताखाठना, थनानंनिहावानावा, एहर्नकं
दानं, धकंकायाववनदंदाव, वाधकोनुकायायाव, थभवनायाववनदंदाव, वाधनविनत्रयर्ग
नाद्रायायाकाउ (थं), द्रवायाकावउ (थं), उन्यं, अर्धंनावना, अर्धंमरुमवर्धनावना, भवर्धवयूधव,
भवर्धवनावाधकं, थ(थ)वाधनविनत्रयर्ग, हागनी, याखवथवानंनिहावा, थननकुरुमुभावातास

ली

यस्य क इना, वकिं किं वी वा भा, जनद ४ रसया, धन न क स्या य गंदा, जभा वा भा धास वयन, क न द व स म व थ ध
कं हानं, धन व्या धा या व व न द द वा व, मृ ग नी न धा या, ज स्या य इ का द य, ज म ह्रा दः सि, गहि न भू ति द र्द ल थ
धि द र्द क न य ज, स्या य इ का द य, ज नान क रू फि म इ य व, वा व ना, ध नान व य, महा व न वी ग, न व ध क, दा
क द व, रू रू धा व, ध नान व य, थ ध द द र्द व य, ज स्या य म न व, ज मि सा ज्ञा न इ व स नं ज स रू भा व, क न स न व र्द व
य नि ध य ध क, क रू य कं धा, हा ध न र्द व ध कं धा या व, ध न मृ ग नी या व व न द द वा व, धा ध नू द द वा व धा व, हा म ग नी
या रू व दू नि, क न स न व र्द व य मा र्द, स रू ध न र्द व र्द क, इ नि ध कं धा या ॥ ॥ मृ ग नी उ वा व ॥ हा ना स, ध नू र्द व, द रू न,

क जी या स, म म स म स्या द या या र्द, ना भा क द द या या र्द, प धा स ना रू या द या र्द, क वि न थ म क कान या या र्द
य, रू स र्द द या या र्द, द रू व द्धि न भ व या ना धा द या र्द, ज्ञा न न म म या या र्द, भ व द ४ र व न का या या र्द, रू स्या व रू
या द या र्द, कं न्या मि या या या र्द, स म रू ध म र्द ना व ना या या र्द, रू स र्द न थ म स या र्द, सा र्द इ या या र्द, मा म व व म न क स,
ध म इ कान या या र्द, स्या द या या र्द, सा, म स, ध न, द र्द ना रू न, ना स धा न क या या र्द, क न स भा व का या या र्द, वि य कि व न स
भा व का या या र्द, ध न या र्द ज्ञा, क न स न व र्द म व न सा ध कं, ध न या रू द द वा व, धा ध नू द द वा व, धा स वा द वा व, व ना ल व
ना व ध र्द, ध व ना प रू वि स र्द रू भा द वा व, व न ना द वा व वि हा वा न, ध न लि, धा ध न, धा ल मा द वि स, धा द वा व, सा य द न

वार्न॥ ॥ धनलि विदु याव पलादाव कु नूमादाव निव निव धर्क न्नादाव कु नमवर्न थवा धनयहवय
 नि महादेव दू जायार्न वनावयुव लवयाव थ (थवा न रयंक न द्वा द्वा ताहा क न महा हागी वाव वाव न
 थवा धन थवना ववरवादाव लवधन वना धर्क वा धन द्रसया त (थन क वि (गान सा नाव थ (थं माव नामाव
 वव वाव नान वनादा याव थ म द्वा य ता द र्य दाव विन नयाव निधय क मा ना थ याव क स नागी कु यान डा
 उनि ज द्वा धान क थवा धन स्या गा थ य नि सु म द क न द्वा व सि द्वा न रि द्वा म्वा दा व द्वा या य सु थि द्वा रि द्वा द्वा न
 म द्वा व न सी सु म द न द्वा व धर्म स व व न य म द्वा सि मा का स कि थ क न सु द व था स क म रि न स न ही द्वा क वा सु म

६

द न द्वा व वना न व डा उ थ धर्म दय क स सु य व व या सा ह स वि द भवन व व र सु य य त व ध द्वा क
 न म द्वा सु य य ध द्वा स र क न म द्वा म नू य या वि म हि स सु य य ध द्वा स द्वा स या न सु क स सु म द त द्वा व व
 ना न व र्वा दान म क व त्त उ नि द्वा क क उ याला उ ति क द्वा न उ याला व क ल य त व थ सु य नि न क
 म न द्वा व उ म्मा दा या नि सु व ध क द्वा स त सा द व ॥ य गु यो गु स मा की लू दा सि दा स भ मा क ली ला यो वि
 व हि ग र्प सा उ थ व ल त थ गृ हा का य क य स पू लू द त स ना दा सि दा स अ दि क द त स ना सु व त्त म
 द न द्वा व थ गु लि क व व ल ध ध य ध क थ थ वा व ना न वि न न या व वा धा हा र्ग ला नी स वा धा क क क न क

श्री

गाढनं वगननकाङ्कनं श्रुसश्रुसधर्कं धनानमाचनानर्कववना गनावानां छे नस्याय धुनीनां सख्यन
काङ्कनं धर्कं धयाव धवनायावचनं ददाव वाधकोरुकचायाव चिन्नवयनं धसामानामसनां देवना
वनाया वृषकायाववना धर्कं धधेवि न्नयाव धवाधनधर्कं धनामाचनानर्कववश नर्कवया नानीनि
हानां ऊङ्कवननयाखववाना धयनिर्माहवावता धव ऊङ्कना श्रुनवना धनन ऊङ्कना वतमजीव धनवाध
यावचनददाववाचनानधर्कं ॥ मृगउवाच ॥ शवाध ऊङ्कनासन ऊङ्कवननग धयाखववानं ऊङ्कना निर्मा
सशया ऊङ्कना निर्माहवावता धव ऊङ्कना श्रुनवना धनन ऊङ्कना वतमजीव धनवाध
यावचनददाववाचनानधर्कं ॥ मृगउवाच ॥ शवाध ऊङ्कनासन ऊङ्कवननग धयाखववानं ऊङ्कना निर्मा

त

दाववाना धर्कं धवाधनधयाखववानं मृगनधर्कं ॥ मृगउवाच ॥ शमीसनयाखव वाध धननयाखववा
न कनसतवर्क ऊङ्ककवय निधय ऊङ्कना श्रुमति ऊङ्कना धननसुसजाग यादाव कनसतवर्कवय
याखयर्क ऊङ्कना धनवाचनयावचनददाव वाधनधर्क ऊङ्कना यर्कयादाव धरुवृद्धि न दकार्क ऊङ्क
ना मृगुयमरुतिगीन धवजीववकायायनिमिलिनकाङ्कना ऊङ्कना वर्कनिव भव धनामवयुधर्क
वाधयाखववानं वाचनानधर्क सख्यउयनात ऊङ्कना मृगुयर्क ऊङ्कना धनवनायावचनददाव
वाधनधर्क शमीमृगुयनिर्माहवावता धव ऊङ्कना श्रुनवना धनन ऊङ्कना वतमजीव धनवाध

६३

धकावधर्व॥ ॥मृगउवाच॥मनुष्या ब्रवता नसुगृहनाश, धमसवत्रयं वा दाना ज्ञाभाव का पापं, न ज्ञावंच
ना पापं मिश्रं वना पापं, पूसमियासुन का पापं, गुददाहाया दयापं, जाक दया पापं, वाक्कल नमनं
नयाया पापं, पत्रमु कामया दयापं, धवममु निदाया दयापं, वाक्कल कृणी, वेध, सुद नस वामधया
पापं, सुद न, वाक्कल वर्यया दयाप, वाक्कल न, कामन धकन, धन धवि वि (मत्रसु, मत्रया, नाहा, धम, रयन
त्रस, धनाय रु, दद, हा कृ पूसा, समसु मभ का मिया पापं, धन समसु पापं कता, कन सन व नम वनसा॥ अदिक
कृ दाय, कंमनु धन नम, यंम न लंग, पाय रु लन, धुव द्या स मत्र, पुनडा नम कृ गति, हा धनू नत्र, कस ल्या स कृ न, धन वा
वा॥

१०

वनाया ववन ददाव, व्याध नूदा ददाव, दासी गय, वनात्रिकायाव, वना भाव नं कान, धव नायूरु विसर्ल रता द
व, वया नानं लिहानं, माव नाय निवयानानं निहाना, ध व्याध, व्यानमाया द विसधा ददाव, नासवा इयाव, व्यानया ग, वा
वा दू ददाव, महाद वयु जायानं, विक्रयाव, निव निव ध कं दयाव, धव कृ विहा व नया द ददाव॥ धन लिहूर्य नूना, ध
व्याध, धम लत्रयनं, या दामर न का कस्तान महायु नाना नं, निवयु जाया दयाय रावन, ध व्याधया, गल्लाननं,
समसु पापं दू नं, धना ध व्याध नदग दिगं वा कुची कुसयाव, आभम दयाव, धव कृ व नया ददाव नानं, धनं लि, धमा
वन, वाव्यकाव, कनत्रियका, ववमाव नारं ददाव, वना दयाव दूयतानं, ध ध दूय ता द रं ददाव, माव नान

धर्म, शाखा धा अवान नह्यायमभव, अव कायायमाल, धम्यात्मा कुडनसा कुडीठठ, अवधान नवधर्क, धम
 मुसधयावतया, धका वधाठ, कामयावववाध, दुदमानकाववाध, नागा, वालक, माव नाह सावानलिक, धम
 नाज्ञान श्रुतनयायमद्, धम सुसठठा, धधधम भावताव, कुन अस्याय नाहवसा, धभावाता कुसयासायनिववडा
 सीताधव, अवययारुयक धादुन, धर्क, धम सावनाया ववठठव, धव्या धान धान, धयधु मधुहिं कुन धम
 सदयकावस स्यावव, वावयकाव, वाननया शावव, वव, वना, धयास ह्यदव, धयनिभाव कमठव धर्क, वाध
 नभावन धिर्न, धव्या धान, धम थाव पृषु विनभावन धिर्न, स ह्य ह्य कव नायनिसन, समरु ववनठठव, कुन या
 वि

धधिदका कुनभावकवसा, कुन धिधस्थानीव धर्क, विनययावा, धननिवा धया मामववून धान, कुस अन्नमद
 याव, धयावववाठ, भावाभा आसवु ना, मामववु भावाभा सी, रुन रुन ववोयाववा ना, अन्न कुस कुनीमद्, ववून न
 महुव धर्क भावाभा आसवु ना, धा धानव नायनिसववनठठव समरु र्वु मावव, कुन मवव, अतिको कु क
 वायाव धा धान विनयया, धयनी सयवुव, स ह्ययावववाठ, अवसन साववय, कुन स्यायमरु, महायवुव धय
 नि, स ह्यववधर्क, धधध धा धान विनयया, को कु क वायाव, धनलिध धा धान भावन धिर्न, माव नाह धर्क
 धव धव अश्रमसनार्य, धमुन, वावयकाववव, वामदुर्क कामनयीदवय थाठ धर्क, वाववान कुजीया ती, वा न विवध

ॐ

ऋक्षी जयार्त्तं धयनि (ध) धा धाया र्वकाया धना वाव नान हार्त्तं, शस्त्रीया लत्र काया द्वाव धाव वि (ग) खन सिंघ
 ब्राह्म कि सि, धा धाया रुयन ग्मा क, मावा गात्र कथमाल, अस ह्यमाव कमजिव, धन न अवन, स ह्यमाव कवर्क, महा
 ह्यमाविव जन्मनिवर्थ, धन न, कृपनि सान, सँ नान न काया द्वा धनमाल, स ह्यन स र्म वासविय, ००० द्वा क स र्म सँ
 दय सँ नान न, धन न, कृ उयाय न, सँ नान दय क माल, पूरु दय क मान, स र्म स र्म विरियिव, पूरु म द्वा य गति म द्
 कृ उयाय न पूरु दय क माल, पूरु न द्वा निदान याय मान, ऊ धा धाया क वन, स ह्ययानि मिहिन, स वाम ग्मा क, ध
 धं वाव नाया व वन द्वाव, माव नान धा र्व, राम ग क, उरुम, म ग क, जयनि क व नाया व य, ग (ध) धु, अ

१२

वाव क यनि स्याद न धर्क धा र्व, धन व नाया व वन द्वाव, धा धा स क धा र्व, कृ दा स न म द्, धन न विव र
 म्मा स्या स्या द् न धर्क धा र्व, जयनि स ह्ययायु खवन, पविगु द ह्यया द् स र्म वन, धनि क स क र्मु वयाया ल
 जागु व र्क, ध (ध) व नान धया द् द्वाव, धा धा न, ध व ज्ञा सानि ह्याया र्व, व ना हार्त्तं ॥ ॥ नृद्व क उवाच ॥ राम ग न
 ऊ, जन क म स्या क न्, ध व ज्ञा गु म विहा द् निन, ध र्क वा र्व वाव धा र्व, कृ भाव काव कृ याय, ऊ क र्म न कृ र्व
 उाशय्, कृ भाव क व सा, कृ दायाय्, भव दा खन का याय्, ऊ ना, आव न लि जन जिव म का व (ग) कृ, व था स व
 निमिहिन, ऊ न याय म का व (ग), ऊ ना कृ न, ध र्म, उय द धा विरय माल, गु वृ कृ, श व ना उरु म य नृ व कृ, कृ

५१

वसुधैव कुटुम्बकम् विहाद निभं वनासमुत्तावधुना सत्यधर्मो अग्रमयाय धुना धर्मं व्याधयावचनददाव
 वनानधर्मा ॥ ॥ मृगउवाच ॥ श्रुत्वा धर्मं यतीसकर्मनायादावकुर्वन् वया सत्यनिमित्तित्त्वं धर्मं नमथ दद्याद्
 न वानवानधर्मा कयापमदु जनकं (गायानाशिरु श्रुत्वा सत्यवाचाविस्मया तां धाम्ना दूतं थ (धवत्राय निस्सन्न
 याददाव व्याधनधर्मा ॥ ॥ व्याधउवाच ॥ श्रुत्वा त्रिहादू निभं जनमस्याकत्र निश्चयं वयुक्कं गुणुक्कं
 मामकं सुदुदयं कं जनलिवनाभाकधुनधुना स्यात्सु स्यात्सु गुणं समस्तं थमथमयादाधर्मना
 सुकमानवनं धर्मनश्रुत्वा विहावनिभधर्मं थ (धधयाव पुनव्याधनधर्मा दवकुर्वन् वनावनि यदकि

व३

धमयादाव वाकवदायाव शकययाव दमाशुर्न थवत्र स आकासनधननूर्न गर्जमानं धववाद्य धयावध
 वलाकन आशुविर्न अतिमूमनादववादाव स्नानवागभवकेर्न श्रीमहादेवस आशुन सुवर्ण विमानं जादा
 व देवदूतसमस्तवयाव दूतनधर्मा ॥ ॥ देवदूत उवाच ॥ श्रुत्वा धर्ममहायुवकं समस्तया जिवभावका
 ववादकं जिववागयाय सवनं कृतयाय समस्तभाभा थविमानसदीदाव आभा गवीवस्वर्गवनं जिववागकृद्
 उयवासयादानं जागन्नायादानं सुरुचयर्तिं महादेवसु जायादानं थ भेदक नसमस्तं यायनभात्र नना नृदमलु
 ववननया थविमानसदीदाव विगुयकृर्न याय इना हसृगवाज कृष्णीयनि स्वर्गद भावाभासहितं थ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नाम नाम नाम नाम नाम नाम नाम ॥ विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु ॥ श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण
 श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण ॥ यना नायना नायना नायना नायना नायना ॥ मद्रुद्र म
 द्रुद्र मद्रुद्र ॥ वासुदेव वासुदेव वासुदेव ॥ श्री कृष्ण विष्णु मद्रुद्र नमस्कृत्य कामिका कामिका निम
 न ॥ ॥ भुरु ॥ भुरु मद्रुद्र सर्वदा ॥ भुरु ॥ ॥ सा नगी ॥ यु ॥ ॥ क न जानिम किं क न रह रह वं क न न नि
 रला, आति काति व न ॥ क न हामत लं कम ना नृथ रला ॥ वा नि यु ना नृथ प्र क ह न
 न ॥ मत्र अका नृथ ग न, मत हि नृ नृ नृ मय वृ ह न, वृ ह न कृ म म व न ॥ स्व ग यि गि य गि म
 ॥ य व नृ नृ नि व क स ल नृ सृ क वि ग न विले र न ॥



